ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड-VII अंक-X

जनवरी 2016

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- मज़मून आधारित पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा कृषि उद्यमवृत्ति कौशल को दृढ़ बनाना
- इस माह के कृषि उद्यमी : डॉ. काब्या ज्योति बोरा, असम
- इस माह का संस्थान : केवीके, बारामती, महाराष्ट्र
- "युवा कृषि भूषण पुरस्कार" से सम्मानित कृषि उद्यमी

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

मज़मून आधारित पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा कृषि उद्यमवृत्ति कौशल को दृढ़ बनाना

प्रति वर्ष लगभग 500 स्थापित कृषि उद्यमी ऐग्री-क्लीनिक एवं ऐग्री-बिज़नस क्षेत्र प्रायोजित योजना के अंतर्गत पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते है। तीन वर्ष का अनुभव प्राप्त स्थापित कृषि उद्यमियों के लिए इस पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य है उनके चयनित क्षेत्र में उनके ज्ञान का अद्यतनीकरण करना और व्यवसाय नेटवर्किंग और बैंक लिंकेज को बढ़ावा देना। इसे ध्यान में रखते हुये, मैनेज ने विभिन्न राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों और ग्रामीण विकास संगठनों को सम्मिलित कर विषय आधारित पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किया है। पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक कृषि उद्यमियों के चयन के लिए प्रयुक्त मापदंड इस प्रकार है:

- कृषि उद्यमी ने ऐग्री-क्लीनिक एवं ऐग्री-बिज़नस केंद्र (एसी एवं एबीसी) योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त किया हो।
- कृषि उद्यमी ने उसका कृषि/संबन्धित वैंचर स्थापित किया हो और तीन वर्षा का अनुभव हो।

कृषि उद्यमी पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रमों

क्र.सं.	विषय	प्रशिक्षण संस्थान का नाम
1.	बायो-नियंत्रण एजेंट और सूक्ष्म जीव बायो-कीटनाशकों का फार्म में उत्पादन	राष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान (रा व स्वा प्र सं), हैदराबाद
2.	एसी एवं एबीसी योजना के अंतर्गत कृषि उद्यमी हेतु कृषि बैंकिंग	स्टेट बैंक इंस्टीट्यूट ऑफ रुरल डेव्लपमेंट (एसबीआईआरडी), हैदराबाद
3.	मॉडर्न डेरी का प्रबंधन	राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई), कर्नल, हरयाणा
4.	ग्रामीण उपक्रम	राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान (रा ग्रा वि पं रा सं)
5.	कृषि उद्यमियों के लिए जल प्रबंधन में अवसर	राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज)-हैदराबाद

जलकुंभी से मूल्य बनाना

इकोर्निया क्रसीपेस जो आम तोर पर वॉटर हायासिन्थ के नाम से जाना जाता है एक जलीय शैवाल है जिसे असम के समतल क्षेत्रों में बेकार समझा जाता था, उसे अब प्रभावी रूप से पर्यावरण के अनुकूल उत्पाद तैयार करने हेतु प्रयोग किया जाता है जिसके कारण ग्रामीण महिलाओं को आजीविका उपलब्ध हुई है। डॉ. काब्या ज्योति बोरा (47), एक काबिल पशुचिकित्सक जिन्हें उत्तर-पूर्वी भारत में एनजीओ के क्षेत्र में 12 वर्ष से अधिक का अनुभव है, इस गतिविधि में ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु सक्रिय रूप से कार्य कर रहे है। डॉ. बोरा का कहना है कि करीब रु.200 के छोटे निवेश से कोई भी वॉटर हायासिन्थ से हस्तशिल्प तैयार कर सकता है। डॉ.बोरा ने वर्ष 2010 में इंडियन सोसाइटी ऑफ ऐग्रीबिज़नस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) गुवाहाटी से ऐग्री-क्लीनिक एवं ऐग्री-बिज़नस केंद्र (एसी एवं एबीसी) योजना प्रशिक्षण पूर्ण किया। उनके प्रशिक्षण के तुरंत बाद उन्होंने 2013 में एएलपीईडी (असोशिएशन फॉर लाइवलिहूड प्रमोशन एंड एंटर्प्रिन्यरशिप डेव्लपमेंट) नामक संस्था स्थापित की। एनईडीएफ़आई (नॉर्थ ईस्टर्न डेव्लपमेंट फ़ाइनेंस कार्पोरेशन लिमिटेड) के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से डॉ. बोरा ने असम के कामरूप जिले में 100 से अधिक ग्रामीण महिलाओं को वॉटर हायासिन्थ से सुंदर बैग, गुलदस्ते, कार्यालय के फोल्डर और फ़ाइल और अन्य उत्पाद बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया है जो ग्रामीण महिलाओं की आय में बढ़ोतरी करता है और उन्हें आजीविका के अवसर प्रदान करता है। वॉटर हायासिन्थ से शिल्प की सामाग्री बनाना एक नया दृष्टिकोण था और उनका उद्देश्य बेरोजगार ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को इस अनुपयोगी वस्तु से धन बनाने हेतु उन्हें प्रशिक्षित करना था। आरंभ में, वें दुविधा में थे और इस प्रकार के प्रयोग की सफलता और स्वीकार्यता के बारे में अनिश्चित थे, हालांकि अंत में, इसने न केवल ग्रामीण गरीबों की जिंदगी को बदला बल्कि इस जलीय शैवाल को भी मूल्य प्रदान किया है।

प्रशिक्षण स्कूल में डॉ बोरा

महिला प्रशिक्षुओं जल जलकुंभी की कटाई

एएलपीईडी के अंतर्गत विकसित प्रशिक्षण कार्यक्रम 10 दिनों का है और अभ्यर्थियों की न्यूनतम उम्र 18 वर्ष है। यह प्रशिक्षण ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के लिए बिलकुल मुफ्त है। एनईडीएफ़आई (नॉर्थ ईस्टर्न डेव्लपमेंट फ़ाइनेंस कॉर्परेशन लिमिटेड) द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। प्रशिक्षण के पश्चात, यह ग्रामीण युवा तुरंत शिल्प तैयार कर सकते है और अपनी आजीविका कमा सकते है। डॉ. बोरा का कहना है कि यह कार्य गाँवों में उपलब्ध अन्य कार्यों से कम मेहनत वाला है इसके अलावा इसे कोई भी अपने खाली समय में कर सकते हैं। इस गतिविधि को बनाए रखने और शिल्पकारों को सहायता प्रदान करने हेतु एएलपीईडी, असम ने इन शिल्पकारों द्वारा बनाए गए शिल्पों के लिए बाज़ार में संपर्क स्थापित करने हेतु एनईडीएफ़आई से सहकारिता स्थापित की है। एनईडीएफ़आई के पास इन शिल्पकारों के उत्पादों को बताने और जमा करने के लिए गुवाहाटी, असम के सबसे बड़े शहर में स्वयं की 'क्राफ्ट गैलरी' है और शहर के मध्य में 'एनईडीएफ़आई हट' नामक स्थायी प्रदर्शनी स्थल है जो दोनों स्थानीय और पर्यटकों के लिए लोकप्रिय स्थान है। वॉटर हायासिन्थ के उत्पाद क्षेत्रीय और राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी प्रदर्शित किए जाते है। शिल्पकारों के पास देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपने उत्पादों की प्रदर्शनी के लिए अपार अवसर है। डॉ. बोरा का वार्षिक कारोबार रु.5.50 लाख है और उन्होंने एएलपीईडी-असम में प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु 40 व्यक्तियों को नियुक्त किया है। डॉ. बोरा का कहना है कि, उत्कृष्टता की प्रतिबद्धता, प्रयासों में निरंतरता और सही समूह से संपर्क, सफलता का राज़ है।

सुश्री. मृदुला बारूयाह, असम के कामरूप (ग्रामीण) जिले के हाजो ब्लॉक के गार्पोट ग्राम की निवासी है। उन्होंने माध्यमिका की है और एएलपीईडी में पहली बैच में 10 दिनों के प्रशिक्षण में भाग लिया। उनका कहना है कि, "प्रशिक्षण के पश्चात, स्वयं के रु.200/- के निवेश से मैंने शिल्प बनाना आरंभ किया। मेरा पहला शिल्प 'एनईडीएफ़आई हट' में प्रदर्शित किया गया और 10,000 का निवल लाभ प्राप्त हुआ। मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और आज में अपनी माँ और दो छोटे भाइयों की

डॉ. काब्या ज्योति बोरा
एच. सं.-7, के. कोच लेन, पब-सरणीय, गुवाहाटी, कामरूप, पिनकोड़: 781003, असम, ईमेल आई.डी: borakabyajyoti@gmail.com
मोबाइल सं.: 09864071130

डॉ. सैय्यद शाकिर अलि
नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम: कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) बारामती, महाराष्ट्र

पता: बारामती कृषि विकास ट्रस्ट, शारदानगर, पोस्ट मालेगांव कॉलोनी, तालुका: बारामती, जिला: पुणे-413 415, महाराष्ट्र, फोन: 0211-2255207, फ़ैक्स: 02112-255227

मोबाइलसं.: 09822402768 /09922415151

ईमेल: asshakir74@rediffmail.com, kvkbmt@yahoo.com

वेबसाइट: www.kvkbaramati.com

प्रशिक्षण की सं.: 21

प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की सं.: 617

स्थापित वैंचर की सं.: 253

सफलता का दर: 41%

स्थापित ऐग्री-वैंचर: ऐग्री-क्लीनिक, डेरी एकक, कुक्कुटपालन, नर्सरी एवं भूदृश्य निर्माण जैव-उर्वरक की बिक्री, मृदा परीक्षण केंचुआ खाद एकक, ऐग्री-बिज़नस केंद्र, दूध एकत्रण केंद्र, अंगूर का उत्पादन और निर्यात, पशु चिकित्सालय, केले का उत्पादन एवं निर्यात, आदि।

'कृषिक' : कृषि उद्यमियों को कॉर्पोरेट क्षेत्र से जोड़ते हुये

कृषि विकास ट्रस्ट कृषि विज्ञान केंद्र, बारामती 2006 से केंद्रीय प्रायोजित ऐग्री-क्लीनिक एवं ऐग्री-बिज़नस केंद्र योजना पर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए मैनेज, हैदराबाद से जुड़ा हुआ है। कृषि विकास ट्रस्ट कृषि विज्ञान केंद्र, बारामती ने "कृषिक एक्स्पो" नामक 3 दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया जहां कृषक, सरकारी अधिकारी, कृषि-विशेषज्ञ, कृषि-कंपनियाँ और सामाजिक संस्थाएँ साथ आयी और अपना ज्ञान, विचार और विशेषज्ञता साझा की। कृषिक लाईव डेमो एवं ऐग्री एक्स्पो का पहला संस्करण 6 से 8 नवम्बर 2015 तक बारामती, पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित किया गया।

माननीय श्री. देवेंद्र फड़नवीस, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने माननीय श्री. एकनाथ खड़से, महाराष्ट्र के कृषि मंत्री, माननीय श्री. शरद पवार, पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री, माननीय गिरीश बापट, पुणे के संरक्षण मंत्री की की उपस्थिती में इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया एवं इसमे अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। 400 से अधिक कंपनियों/संगठनों ने अपनी तकनीकों के जीवित प्रदर्शन एवं मशीनरी और उपकरणों के प्रदर्शन द्वारा इस कार्यक्रम में भाग लिया। प्रदर्शनी स्टॉल, विडियो शो, पशु शो आदि इस एक्स्पो के भाग थे। इसके अतिरिक्त, 10 कृषि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान स्टेशन ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और उनकी तकनीकें बताई। 110 एकड़ जमीन में आयोजित यह कार्यक्रम कृषि

उद्यमियों के लिए सरकारी अधिकारियों और नीति निर्माताओं से जुड़ने के अलावा कृषकों के साथ जुड़ने और ऐग्री-कंपनियों से उनकी उत्तम पद्धतियाँ सीखने के लिए स्वर्णिम अवसर था। बातचीत और नेटवर्किंग के लिए विशेष लाउंज के साथ कृषि में आधुनिक तकनीक पर विशेषज्ञ सत्र इस आयोजन का मुख्य केंद्र था। यह समारोह प्रमुख स्थानीय और राष्ट्रीय मीडिया घरों द्वारा कवर किया गया।

"युवा कृषि भूषण पुरस्कार" से सम्मानित कृषि उद्यमी

ऐग्री-क्लीनिक एवं ऐग्री-बिज़नस केंद्र योजना कृषि विज्ञान केंद्र, दुर्गापुर द्वारा अमरावती जिले के कृषि स्नातकों और डिप्लोमा धारकों को ऐग्रीबिज़नस कौशल प्रदान कर रहा है। श्री.राहुल बेलसरे उन कृषि उद्यमियों में से एक है जिन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किया है और अमरावती जिले के नया सावंगा में सफलतापूर्वक केंचुआ खाद उत्पादन एकक आरंभ किया है। उन्होंने राज्य कृषि विभाग, अमरावती से रु.1,600/- की दर पर 4 किलोग्राम केंचुए खरीदे और उन्हें कोंपोस्ट शेड में डाल दिया। पहली उतपत्ति में उन्हें 500 किलोग्राम केंचुआ खाद प्राप्त हुआ जो अब 2000 किलोग्राम प्रति माह तक पहुँच गया है। पहले इस क्षेत्र में कृषक सब्जियों और फलों की फसलों के लिए एफ़वाईएम और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते थे। अब कृषक सब्जियों, फल कृषि और नागपुरी संतरे के लिए केवल केंचुआ खाद का ही प्रयोग कर रहे हैं। केंचुआ खाद के प्रयोग ने मिट्टी की उर्वरता के अलावा उत्पादन बढ़ाया है और सब्जी, फलों की फसल और नागपुरी संतरे की गुणवत्ता (स्वाद) बढ़ाया है। इस महान गतिविधि को मान्यता देते हुये, केंचुआ खाद के उत्पादन और विपणन में उत्कृष्ट कार्य के लिए राज्य कृषि मंत्री द्वारा श्री. राहुल बेलसरे को "युवा कृषि भूषण पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। श्री. बेलसरे से "भूमि रत्ना गंडुल रत्ना वा गंडुल कल्चर, नया सावंगा, चंदूर रेल्वे, अमरावती जिले, मोबाइल : 09923188751, 07222-202929 पर संपर्क किया जा सकता है।

श्री राहुल बेलसरे युवा कृषि पुरस्कार से सम्मानित

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों, के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

"कृषि उद्यमी" श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
कृषि-उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंधन संस्थान (मैनेज),
राजेंद्रनगर, हैदराबाद -500 030, भारत
ई-मेल: agripreneur@manage.gov.in

मुख्य संपादक : श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, संपादक : डॉ.पी. चन्द्रशेखर ,सहायक संपादक: डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमति ज्योति सहारे,
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली